International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 11, November 2018
Website- www.aarf.asia, **Email** :, editoraarf@gmail.com

काण्ट का नीतिशास्त्र

डॉ.सुमित्रा चारण
व्याख्याता,दर्शनशास्त्र विभाग
राजकीय डूंगर महाविधालय,बीकानेर(राज)

पाश्चात्य दर्शन में काण्ट को समीक्षावादी विचारक माना जाता है।काण्ट से पूर्व बुद्धिवादी विचारक ये मानते थे कि सम्पूर्ण ज्ञान बुद्धि पर आश्रित है तथा इन्द्रियों द्वारा प्राप्त अनुभव की ज्ञान प्राप्ति में कोई भूमिका नही है।इसके विपरीत अनुभववादी विचारकों का मानना था कि ज्ञान प्राप्ति पूर्ण रूपेण अनुभव पर आधारित है तथा ज्ञान प्राप्ति में बुद्धि की कोई भूमिका नही है।काण्ट ने इन दोनों एकांगी दृष्टिकोणों का खण्डन करते हुए बताया कि ज्ञान प्राप्ति में बुद्धि तथा अनुभव दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।ज्ञान की कच्ची सामग्री हमें अनुभव से प्राप्त होती है तथा उसे व्यवस्थित करने का कार्य बुद्धि द्वारा किया जाता है ।इस प्रकार बुद्धिवाद तथा अनुभववाद की समीक्षा करने के कारण काण्ट का दृष्टिकोण समीक्षावाद कहलाता है।

काण्ट अपने ज्ञान मीमांसीय चिंतन के अतिरिक्त अपने नैतिक चिन्तन के लिए भी जाने जाते है।काण्ट का नीतिशास्त्र परिणाम निरपेक्ष नैतिकता के लिए जाना जाता है जिसे निम्नलिखित शीर्षकों के द्वारा समझा जा सकता है –

- मानव कार्यो के तीन वर्ग – काण्ट के अनुसार किसी व्यक्ति के कार्य तीन कारणों से प्रेरित हो सकते हैं। ये हैं –
  - संवेग या भावना से प्रेरित कर्म
  - आत्मप्रेम से प्रेरित कर्म
  - कर्त्तव्य की भावना से प्रेरित कर्म

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

काण्ट के नीतिशास्त्र में परिणाम के स्थान पर कर्तव्य भाव को अधिक महत्व प्रदान किया गया है। काण्ट के अनुसार कर्त्तव्य पालन से प्रेरित कर्मों का ही नैतिक मूल्य होता है।

- काण्ट के अनुसार कर्त्तव्य का अर्थ – नैतिक नियम के प्रति सम्मान की भावना से प्रेरित होकर किसी नियम के अनुसार कर्म करने की अनिवार्यता कर्त्तव्य है।काण्ट के अनुसार केवल उन्हीं कार्यों का नैतिक मूल्य है जो कर्त्तव्य की शुद्ध भावना से किये जाते हैं।इस सम्बन्ध में अन्य विचार निम्नलिखित अनुसार है–
  - ✓ कर्त्तव्य पालन के साथ यदि संवेग हो तो स्वीकार्य है – काण्ट कहते हैं कि यदि कर्त्तव्यपालन से प्रेरित होकर कोई कार्य किया जा रहा है और उसमें संवेग भी शामिल है तो वह कार्य नैतिक दृष्टि से मूल्यवान है।
  - ✓ कर्त्तव्य परिणाम निरपेक्ष है – काण्ट के अनुसार कर्त्तव्य का पालन कभी परिणाम की इच्छा रखकर नहीं किया जाता। कर्त्तव्यपालन के लिये उससे सम्बन्धित परिणाम को भूलना आवश्यक है।
  - ✓ इसी कारण काण्ट सुखवाद और उपयोगितावाद की आलोचना करते हैं क्योंकि इन सिद्धान्तों में परिणाम के आधार पर किसी कार्य का मूल्यांकन किया जाता है।
- कर्त्तव्य के लिये कर्त्तव्य का सिद्धान्त – काण्ट के अनुसार कर्त्तव्य का पालन इसलिये करना चाहिये क्योंकि वह हमारा कर्त्तव्य है। इसके अतिरिक्त इसके पक्ष में कोई भी तर्क नहीं दिया जा सकता। यही कर्त्तव्य के लिये कर्त्तव्य का सिद्धान्त है। काण्ट कहते हैं कि कर्त्तव्य पालन में सुख प्राप्ति मुख्य लक्ष्य नहीं है बल्कि यह तो गौण लक्ष्य है।
- काण्ट के अनुसार कर्त्तव्य के प्रकार –काण्ट ने कर्तव्यों को पूर्णबंधी तथा अपूर्णबंधी दो भागों में विभाजित किया था जिनका पूर्ण वर्णन निम्नलिखित अनुसार है –
- ○ पूर्णबन्धी कर्त्तव्य – ये वे कर्त्तव्य हैं जिनका पालन व्यक्ति को प्रत्येक स्थिति में करना ही पड़ता है। किसी भी परिस्थिति में व्यक्ति इन कर्त्तव्यों को पालन से बच नहीं सकता, चाहे परिणाम कुछ भी क्यों न हो। एच. जे. पेटन ने इन कर्त्तव्यों को कठोर कर्त्तव्य कहा है और काण्ट के दर्शन को कठोरतावाद कहा है।काण्ट के अनुसार पूर्णबंधी कर्तव्यों के दो उदाहरण निम्नलिखित अनुसार है–
  - ➢ आत्महत्या न करना।
  - ➢ अपना कर्ज चुकाना।

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

- अपूर्णबन्धी कर्त्तव्य – ये व्यक्ति के वे कर्त्तव्य हैं जिनके पालन में काण्ट व्यक्ति को कुछ स्वतन्त्रता प्रदान करता है। अर्थात् अपूर्णबन्दी कर्त्तव्यों का पालन व्यक्ति की परिस्थिति पर निर्भर करता है ।काण्ट ने अपूर्णबन्धी कर्तव्यों के निम्नलिखित दो उदाहरण स्वीकार किये है –
    - शारीरिक शक्तियों का विकास करना।
    - किसी अन्य व्यक्ति की सहायता करना।

काण्ट ने इन कर्त्तव्यों को पुनः दो भागों में बाँटा है –

- स्वयं के प्रति कर्त्तव्य।
- दूसरों के प्रति कर्त्तव्य।

- काण्ट का निरपेक्ष आदेश का सिद्धान्त–कांण्ट कर्तव्य को निरपेक्ष आदेश के नाम से भी सम्बोधित करता है।कांण्ट के निरपेक्ष आदेश सम्बन्धी विचारों को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा समझा जा सकता है–
- आदेश का अर्थ – प्रत्येक आदेश में किसी कर्म को करने की अनिवार्यता शामिल होती है और उसमें 'चाहिये' का भाव होता है।आदेश के भेद – काण्ट ने आदेश को सापेक्ष और निरपेक्ष दो भागों में बाँटा है –
- सापेक्ष आदेश – सापेक्ष आदेश वे होते हैं, जो मनुष्य को किसी अन्य उद्देश्य की पूर्ति के साधन के रूप में कोई कर्म करने का आदेश देते हैं। अर्थात् इनमें परिणाम का महत्त्व होता है। ये परिणाम सापेक्ष होते हैं। जैसे यदि आप टीचर बनना चाहते हैं तो आपको अधिक से अधिक मेहनत चाहिये। काण्ट ने सापेक्ष आदेश को पुनः दो भागों में बाँटा है –
- हेत्वाश्रित सापेक्ष आदेश – ये वे सापेक्ष आदेश हैं जिनके लिये/जिनकी प्राप्ति के लिये कुछ ही लोग प्रयास करते हैं। इसलिये इन्हें कौशल सम्बन्धी आदेश कहते हैं। उदाहरण – यदि आप सूचना सहायक बनना चाहते हैं तो मेहनत कीजिये।
- प्रकृत सापेक्ष आदेश – ये ऐसा सापेक्ष आदेश है जिसकी प्राप्ति के लिये सभी व्यक्ति प्रयास करते हैं। इसी कारण इन्हें बौद्धिक आत्मप्रेम सम्बन्धी आदेश कहा जाता है।
- निरपेक्ष आदेश – काण्ट के अनुसार कर्त्तव्य का पालन हम किसी उद्देश्य लाभ या परिणाम की इच्छा से नहीं करते हैं बल्कि इसलिये करते हैं कि कर्त्तव्य खुद एक लक्ष्य है। इसी कारण से काण्ट कर्त्तव्य को ही निरपेक्ष आदेश कहते हैं।

- शुभ संकल्प—काण्ट के अनुसार जो प्रत्येक परिस्थिति में शुभ हो उसे ही शुभ संकल्प कहते हैं। एकमात्र कर्त्तव्य ही ऐसा संकल्प है जिसका कोई दुरूपयोग नहीं हो सकता है। इसी कारण काण्ट कर्त्तव्य को ही शुभ संकल्प कहते हैं।शुभ संकल्प के अतिरिक्त अन्य वस्तुएँ भी शुभ है। काण्ट के अनुसार कर्त्तव्य का कभी दुरूपयोग सम्भव नहीं है। इसी कारण से वह शुभ संकल्प कहलाता है जबकि अन्य सभी सद्‌गुणों जैसे ज्ञान, साहस, धन आदि का दुरूपयोग सम्भव है।
- **मुख्य नैतिक नियम**—व्यक्ति अपने कर्त्तव्यों का ज्ञान कैसे प्राप्त करे, इसके लिये काण्ट कुछ मापदण्ड बताता है, जिन्हें नैतिक नियम कहते हैं। इनकी संख्या चार है —
  - सार्वभौमिकता का नियम — काण्ट कहते हैं कि वे सभी कार्य हमारे कर्त्तव्य हैं, जिन्हें हम सार्वभौमिक बना सकते हैं। अर्थात् यदि सम्पूर्ण मानव जाति भी उनका पालन करे तो हमें इससे कोई कष्ट नहीं होता है।
  - मनुष्यता को साध्य मानने का नियम — वे सभी कार्य हमारे कर्त्तव्य हैं, जिनके द्वारा हम मानव जाति का कल्याण कर सकते हैं और किसी भी व्यक्ति का शोषण नहीं करते हैं।
  - स्वाधीनता का नियम — वे सभी कार्य हमारे कर्त्तव्य हैं, जिन्हें हम अपनी स्वतन्त्र इच्छा शक्ति से प्रेरित होकर करते हैं।
  - साध्यों के राज्य का नियम — उपरोक्त तीनों के समन्वय द्वारा साध्यों के राज्य का नियम स्थापित होता है।
- **नैतिकता की आव यक मान्यताएँ**काण्ट के अनुसार व्यक्ति को नैतिक कार्य इसीलिये करने चाहिये क्योंकि नैतिकता की आवश्यक मान्यताएँ उसे इस हेतु प्रेरित करती है। नैतिकता की तीन आवश्यक मान्यताएँ है —
  - संकल्प की स्वतन्त्रता — व्यक्ति को कर्त्तव्य का पालन इसीलिये करना चाहिये क्योंकि इस पृथ्वी पर संकल्प की स्वतन्त्रता जैसी महान शक्ति केवल मनुष्यों को ही प्राप्त है।
  - आत्मा की अमरता — व्यक्ति को कर्त्तव्य का पालन इसलिये करना चाहिये क्योंकि आत्मा अमर है और यदि व्यक्ति एक जीवन में कर्त्तव्य पालन को नहीं सीख पाया है तो वह दूसरे जीवन में आत्मा की अमरता के कारण कर्त्तव्य पालन के लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा। कई जन्मों के प्रयासों के बाद जब व्यक्ति सभी कार्य कर्त्तव्यपालन की भावना से ही करने लगता है तो इस स्थिति को काण्ट पवित्र संकल्प कहते हैं।

- ईश्वर का अस्तित्व – व्यक्ति को कर्त्तव्यपालन के लिये प्रेरित करने के उद्देश्य से काण्ट ईश्वर का अस्तित्व स्वीकार करता है और ईश्वर का मुख्य कार्य, कर्त्तव्य पालन करने वालों को आनन्द प्राप्त करना है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1.या.मसीह,पाश्चात्य दर्शन समीक्षात्मक इतिहास

2.डॉ. शोभा निगम,पाश्चात्य दर्शन का ऐतिहासिक सर्वेक्षण(थेलिस से हीगल तक)

3.डॉ. नित्यानंद मिश्र,समकालीन पाश्चात्य दर्शन

4.प्रो.राजेन्द्र प्रसाद,दर्शनशास्त्र की रूपरेखा

5.चन्द्रधर शर्मा,पाश्चात्य दर्शन

6.डॉ.शोभा निगम,पाश्चात्य दर्शन के सम्प्रदाय

7.हरिशंकर उपाध्याय,पाश्चात्य दर्शन का उदभव और विकास

8.फ्रैंक थिली,पाश्चात्य दर्शन का इतिहास

9.प्रो.दयाकृष्ण,पाश्चात्य दर्शन का इतिहास

10.डॉ.ब्रहमस्वरूप अग्रवाल,पाश्चात्य दर्शन

11.डॉ.जगदीशचन्द्र जैन,पाश्चात्य समीक्षा दर्शन

12.डॉ.शशी भार्गव,पाश्चात्य दर्शन

13.प्रो.राजेन्द्र प्रसाद,दर्शनशास्त्र की रूपरेखा

14.डॉ.वेदप्रकाश वर्मा,नीतिशास्त्र की रूपरेखा

15.डॉ. वेदप्रकाश वर्मा,दर्शन विवेचना

16.अम्बिकादत शर्मा,समेकित पाश्चात्य दर्शन समीक्षा

17.गुलाबराय,पाश्चात्य दर्शनों का इतिहास

18.शंशधर शर्मा,पाश्चात्य दर्शन का इतिहास

19.अशोक कुमार वर्मा,नीतिशास्त्र की रूपरेखा(पाश्चात्य और भारतीय)

20.डॉ.कपिलदेव द्विवेदी,आचार शिक्षा

21.डॉ.नित्यानंद मिश्र,नीतिशास्त्रःसिद्धान्त और व्यवहार

22.सुधा चौधरी,नीतिशास्त्र के बुनियादी सरोकार

23.शांति जोशी,नीतिशास्त्र